सातवें भारत-आसियान शिखर सम्मेलन पर प्रधान मंत्री का वक्तव्य

24 अक्तूबर, 2009

मैं थाइलैंड के प्रधान मंत्री महामहिम श्री अभिसित वेज्जजीव को इस हुआ हिन के सुंदर शहर में सातवें भारत-आसियान शिखर सम्मेलन का आयोजन करने के लिए धन्यवाद देता हूं। हम थाइलैंड की सरकार और लोगों द्वारा की गई सर्वोत्कृष्ट तैयारियां और उनकी मेहमान नवाज़ी के लिए आभारी हैं।

मैं इन्डोनेशिया का भारत के लिए समन्वयक के रूप में कार्य करने के लिए आभारी हूं और अगले समन्वयक के रूप में कम्बोडिया का स्वागत करता हूं तथा उन्हें पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन देता हूं।

इस मौके पर मैं हाल ही में इन्डोनेशिया, फिलिपीन्स, लाओस और वियतनाम में घटित प्राकृतिक आपदाओं के कारण हुए जान-माल के गंभीर नुकसान पर अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं।

आसियान क्षेत्र चहुंमुखी आर्थिक विकास का पर्याय है। दिसम्बर 2008 में आसियान चार्टर को स्वीकार करना विश्व मामले में आसियान के बढ़ते वर्चस्व का प्रमाण है। हम इस महत्वपूर्ण प्रगति का गर्मज़ोशी से स्वागत करते हैं।

आसियान के साथ भारत का संबंध हमारी - पूर्व की ओर देखो - नीति का केन्द्र-बिंदु है। हमें विश्वास है कि भारत का भविष्य और हमारे आर्थिक हित हमारे एशियाई भागीदारों के साथ अधिक एकता से साधे जा सकेंगे।

अगस्त 2009 में हुए भारत-आसियान माल का व्यापार समझौता भारत-आसियान क्षेत्रीय व्यापार और निवेश क्षेत्र को सृजित करने के हमारे उद्देश्य की ओर एक बड़ा कदम है। यह सफर आसान नहीं था, परंतु हम विभिन्न मुश्किलों को पार करने में कामयाब हुए हैं और यह हमें भविष्य की आशा प्रदान करता है।

हाल ही की वैश्विक आर्थिक मंदी के बावजूद भारत-आसियान व्यापार एक अच्छी दर से बढ़ा है। वर्ष 2008 में व्यापार का कारोबार 48 बिलियन अमरीकी डालर रहा। विश्व आर्थिक मंदी के बावजूद, मुझे विश्वास है कि हम वर्ष 2010 तक 50 बिलियन अमरीकी डालर के द्विपक्षीय व्यापार के लक्ष्य को हासिल कर सकेंगे।

हम ट्रेड-इन-सर्विसेज और निवेश समझौते पर की गई वार्ताओं की जल्द समाप्ति को काफी महत्व देते हैं और हमें अपने अधिकारियों को तदनुसार निदेश देने चाहिए।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि वर्ष 2007 में सिंगापुर में आयोजित पिछले शिखर सम्मेलन समेत हमारे द्वारा की गई सभी पहलों पर अच्छी प्रगति हुई है। इनमें भारत-आसियान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कोष, भारत-आसियान स्वास्थ्य देखभाल पहल, पारंपरिक दवाइयों में सहयोग, जलवायु परिवर्तन पर भारत-आसियान नेटवर्क और हरित कोष की स्थापना किया जाना शामिल है। लोगों का एक दूसरे से संपर्क बढ़ाने के विभिन्न कार्यक्रम भी कार्यान्वित किये जा रहे हैं। हम आसियान और पूर्व एशिया शिखर वार्ता प्रक्रिया में शामिल अन्य देशों के साथ एक उत्कृष्ट अंतरराष्ट्रीय संस्थान के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना करना चाहते हैं जो समग्र महाद्वीपीय गुणवत्ता से युक्त होगा।

आसियान शिखर सम्मेलन के उद्देश्य - कनेक्टिविटी बढ़ाओ, लोगों को सशक्त करो - को ध्यान में रखते हुए मैं हमारे बीच संबंधों को अधिक मजबूत बनाने के लिए नीचे दी गई पहलों के लिए सुझाव दूंगा -

- भारत-आसियान गोल मेज की स्थापना जिसमें थिंक टैंक, नीति-निर्माता, विद्वानों, मीडिया और व्यापार प्रतिनिधि शामिल हों ताकि ज्ञान की कमी को पूरा किया जा सके। गोल मेज भारत और आसियान देशों की सरकारों को भविष्य में सहयोग करने योग्य क्षेत्रों के बारे में पॉलिसी इनपुट्स प्रदान करेगा।
- स्वच्छन्द नीति पर वार्ताओं को प्रगाढ़ करना, व्यापार और पर्यटक यात्राओं को प्रोत्साहित करने के लिए वीजा प्रक्रिया को अधिक सरल बनाना, युवा आदान-प्रदान कार्यक्रमों को काफी संख्या में बढ़ाना, और भारत तथा आसियान अंतर-संसदीय सभा के सांसदों के बीच आदान-प्रदान की शुरुआत करना।
- भारत में अक्तूबर 2010 या जनवरी 2011 में आसियान व्यापार और औद्योगिक प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- कृषि के क्षेत्र में अधिक सहयोग ताकि खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों से निपटा जा सके। भारत में वर्ष 2010 में आयोजित होने वाली हमारे कृषि मंत्रालयों की आगामी बैठक में विस्तार सेवाओं समेत सहयोग करने योग्य विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान करनी चाहिए।
- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल में सहयोग। हम आसियान देशों में प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन, छोटे उपग्रहों और वैज्ञानिक उपकरणों को छोड़ने और अंतरिक्ष ऐजेंसियों तथा अकादमिक संस्थानों के लिए दूर-संवेदन और संचार से संबंधित प्रयोगों के लिए पे-लोड के बारे में उपग्रह डाटा साझा करने के लिए तैयार रहेंगे।

आसियान एकीकरण की पहल में भागीदार होने पर भारत अभिभूत महसूस करता है। हम उद्यम विकास केन्द्रों और कम्बोडिया, म्यांमार, लाओ पिपल्स डेमोक्रेटिक रिपब्लिक और वियेतनाम में सेन्टर्स फॉर इंगलिश लेंगवेज लर्निंग की स्थापना कर कौशल उन्नयन की परियोजनाओं में शामिल हुए हैं। हमें ऐसे केन्द्रों की संख्या में बढ़ोत्तरी करने से खुशी होगी।

इसके अलावा, वर्ष 2009-2015 के लिए शिक्षा, ऊर्जा, कृषि और वनीकरण तथा लघु और मध्यम उद्यमों के क्षेत्र में आसियान की कार्य योजना में शामिल होकर हमें खुशी होगी।

2010-2015 की समयावधि के लिए आसियान एक आसियान आइसीटी मास्टर प्लान विकसित करने की योजना भी बना रहा है। इस योजना के फलीभूत होने के लिए अपनी सेवाएं देने से और आसियान में ई-नेटवर्क की स्थापना, जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों के चुनिंदा संस्थानों से जुड़ा होगा, में सहयोग करने में भारत को खुशी होगी।

इन सभी पहलों में सहयोग करने के लिए हम आसियान कार्य योजना के दौरान आसियान-भारत सहयोग कोष और आसियान विकास कोष के अंतर्गत 5 करोड़ अमरीकी डालर तक का आवंटन करने के लिए तैयार हैं।

वर्ष 2012 में हम आसियान के शिखर स्तर के भागीदार के रूप में भारत के शामिल होने की 10वीं वर्षगांठ मनाएंगे और एक सेक्टोरल डायलॉग पार्टनर के रूप में 20 वर्ष पूरे करेंगे। ये महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं और इनमें काफी ध्यानपूर्वक तैयारी की आवश्यकता होती है।

हम 10वीं और 12वीं शताब्दियों के दौरान भारत को दक्षिण पूर्वी एशिया और पूर्वी एशिया से जोड़ने के लिए विकसित किये गए समुद्री रास्तों पर एक स्मारक पोत अभियान का आयोजन करने पर विचार कर सकते हैं। समुद्री रास्ते में आसियान देशों और अन्य पूर्वी एशियाई देशों के आधुनिक और प्राचीन बंदरगाहों को शामिल किया जा सकता है।

वर्ष 2012 में भारत-आसियान शिखर वार्ता का आयोजन करने पर भारत अभिभूत महसूस करेगा। इसके ठोस परिणाम सुनिश्चित करने के लिए मैं यह भी सुझाव देना चाहूंगा कि हमें एक संयुक्त कार्य दल गठित करना चाहिए ताकि वर्ष 2020 तक के भारत-आसियान संबंधों के लिए एक विज़न स्टेटमेन्ट तैयार किया जा सके।

आसियान देशों और भारत - दोनों ही की बढ़ती ताकतों और किस तरह हम संयुक्त रूप से हमारी संपूरकता का उपयोग कर सकते हैं और एक अधिक शांतिपूर्ण और समृद्ध एशिया के लिए अपना योगदान दे सकते हैं, को ध्यान में रखा जाना चाहिए ।

हमारे बीच निरंतर बढ़ते सहयोग को ध्यान में रखते हुए यह जरूरी है कि हम प्रभावी मॉनीटरिंग और अनुवर्तन-तंत्र को सही करें ताकि हमारे द्वारा लिए गए निर्णयों का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जा सके।

आसियान देशों के साथ हमारा संबंध एशियाई आर्थिक समुदाय के बारे में भारत की परिकल्पना का एक अहम हिस्सा है जो एक खुले और समावेशी वास्तुकला में निहित है। भारत इस परिकल्पना को साकार करने में आपसी लाभ, आपसी समृद्धि और आपसी आदर के साथ आसियान की भागीदारी की आशा करता है।

***